प्रातः क्लास 9-3-68 ओमशान्ति शिव बाबा याद है?

ओमशान्ति। अभी योग और ज्ञान दो चीज है। बाप के पास यह बहुत भारी खजाना है। खुद ही बच्चों को देते हैं। बाप को जो बहुत याद करते हैं उनको करेन्ट जास्ती मिलती है। क्योंकि याद से ही याद मिलती है। यह कायदा है। मुख्य है याद। ऐसे नहीं ज्ञान बहुत है तो उसका मतलब क बाप को याद करते हैं। नहीं। ज्ञान अलग डिपार्टमेन्ट है, योग अलग डिपार्टमेन्ट है। योग की बहुत बड़ी सबजेक्ट है। ज्ञान की उन से छोटी सबजेक्ट है। योग से आत्मा सतोप्रधान बन जाती है। क्योंकि बहुत याद करती है ना। याद के बिगर सतोप्रधान बनना असम्भव है। बच्चे ही सारादिन में बाप को याद नहीं करते तो बाप मा याद कैसे करेंगे। बच्चे अच्छी रीत याद करते हैं तो बाप की भी याद याद से मिलती है। बाप को खैंचते हैं याद करने लिए आटोमेटकली। यह भी बना बनाया खेल है। जिसको अच्छी रीत समझना है। याद के लिए बहुत एकान्त भी चाहिए। बाबा समझाते हैं पिछाड़ी में जो आते हैं, और ऊंच पद मिलना ही है तो उनकी याद बहुत रहती है। तो याद से फिर याद मिलती है। जब बच्चे बहुत याद करते हैं तो बाप भी बहुत याद करते हैं। वह कोशिश करते हैं। कहते हैं ना बाबा रहम करो। कृपा करो। इसमें चाहिए याद। अच्छी रीत याद करने से आटोमेटकली वह कोशिश होगी। करेन्ट मिलेगी। आत्मा को अन्दर में आता है हम आत्मा बाबा को याद करता हूं। तो वह याद एकदम अडोलती है। ज्ञान है धन की बात। याद से फिर याद मिलती है। जिससे हेल्दी बन जाते हैं। पवित्र बन जाते हैं। इतनी ताकत है जो सारे विश्व का पवित्र बना देती है। इसलिए बुलाते हैं कि बाबा आकर पतितों को पावन बनाओ। अज्ञानी मनुष्य तो कुछ भी नहीं जानते। ऐसे ही रड़ियां मारते रहते और टाईम वेस्ट करते हैं। बाप को जानते ही नहीं। नवधा भक्ति भी भल करते हैं, शिव के मंदिर में जाकर काशी करवट खाते हैं, मिलता तो कुछ नहीं है। फिर भी विकर्म बनना शुरू हो जाता है। माया झट फंसाये देती है। प्राप्ती कुछ भी होती नहीं। अभी तुम बच्चे जानते हो पतित-पावन बाप ही है। [illegible] यह कुर्बानी है याद की। वह तो पहचानते ही नहीं हैं। शिव के मंदिर में भी शिव, शिव कहते जाये कूदते हैं। वह कोई आत्मा, परमात्मा की याद में नहीं है। वह तो समझते हैं शिव-शंकर है। तो यह अज्ञान हुआ ना। अज्ञान से धन नहीं मिलता। न बाप है जो ज्ञान से सृष्टि स्थापन करे। सृष्टि रचे ही जाती है पावनता का और ज्ञान का। यहां तो बाप बार बार कहते हैं बच्चे मन्मनाभव। मुझे याद करो तो पवित्र बन जावेंगे। तुम कान पर जीत पहनते हो। इसमें तुम जितना कोशिश करेंगे मायाविघ्न भी इसमें ही डालती है। वह समझती है कि यह बाप को कर मैं को छोड़ देंगे। तुम ने भक्ति छोड़ दी है ना। क्योंकि तुम बाप के बन गये हो। तो सब कुछ भूल जाना पड़े। न धन, न मित्र सम्बन्धी न शरीर ही याद आये। एक कथा भी है जिसमें कहा लाठी भी न उठाओ। अभी वह कोई यह नहीं कहते कि सब कुछ छोड़ना है। शरीर को भी याद न करो। वह तो सिर्फ चीज के लिए के लिए कहते हैं। बाप तो कहते हैं शरीर ही पुराना है। भक्ति-मार्ग की बातें सब छोड़ दो। एकदम सब कुछ भूल जाओ। सब छोड़ दो। काम में लगा दिया तब याद टूटे। इसमें बहुत मेहनत चाहिए। यह ऊंच पद पाने। शरीर भी याद न रहे। हम नंगे आये थे नंगे जाना है। यह बाप तो बच्चों को बैठ पढ़ाते हैं। इनकी कोई तमन्ना नहीं रहती। यह तो सर्विस करते हैं कि पढ़ो। बाप आये ही हैं पढ़ाने। बाप में ही तो ज्ञान है ना। तो यह बाप और बच्चे का खेल है इकट्ठा। बच्चे को भी याद करना है। फिर बाबा भी बैठ सर्च-लाईट देते हैं। कोई बहुत बैठ खैंचते हैं तो बाप बैठ लाईट देते हैं। बहुत नहीं खैंचते हैं तो यह बाबा भी बैठ बाप को याद करते हैं। कोई समय किसको करेन्ट देनी होती है बाप होकर। फिर नींद भी फिट जावेगी। वही पुर्णा लग जाता फ्लाने का करेन्ट देनी है। पढ़ाई से आयु नहीं बढ़ती। करेन्ट से आयु बढ़ती है। स्वर हेल्दी बनते हैं। दुनिया में कोई की 125-150 की भी आयु होती है। जरूर हेल्दी होगा ना। भक्ति भी बहुत करते हैं। भक्ति में भी फायदा है, नुकसान नहीं। जो भक्ति भी नहीं करते तो इतने मनुष्य आदि अच्छे नहीं होते हैं। भक्तों में विश्वास रहता है। वह तो धर्म में

कव झूठ, पाप ठगी आद नहीं करते। भक्ति का भी प्रभाव रहता है। कहेंगे यह तो भक्त आदमी है। यह जास्ती लेने वाला नहीं है। वह वह कव मारेंगे नहीं, क्रोध नहीं आवेगा। भक्ती की भी महिमा है। मनुष्यों को थोड़े ही पता है भक्ति कवसे शुरु होती है। क्या होता है। ज्ञान का तो पता ही नहीं पड़ता। भक्ति पावर फुल हो जाती है। फिर ज्ञान का जब प्रभाव हो जाता है तो फिर भक्ति को बिलकुल याद नहीं रहता। एक दो में जरूर यह दुश्मन है। दुःख और सुख, ज्ञान और भक्ति का भी खेल बना हुआ है। मनुष्य तो जानते ही नहीं। वह तो समझते हैं सुख-दुःख भगवान ही देते हैं। और फिर उनको सर्वव्यापी भी कह देते हैं। सुख-दुःख तो अलग चीज है। ड्रामा को न जानने कारण कुछ भी समझते नहीं। इतने सब आत्मायें हैं एक शरीर छोड़ फिर दूसरा लेती हैं। यह तुम अभी ही समझते हो। आत्मा ही मुख्य है। मैं आत्मा शरीर लेकर पार्ट बजाती हूं। यह भूल जाते हैं। ऐसे नहीं कहेंगे कि सतयुग में तुम देही-अभिमानी रहते हो। नहीं। यह तो अभी ही बाप सिखलाते हैं कि ऐसे देही-अभिमानी बनो। मैं आत्मा हूं। परमात्मा बाप को याद करना है। पवित्र बनना है। वहां तो है ही पवित्र। सुखधाम। ~~दुःख~~ सुख में कोई याद नहीं करते। याद कर क्या करेंगे। भगवान को याद करते ही हैं दुःख में। सुख मिल गया फिर याद क्या करेंगे। तो देखो ड्रामा कैसा विचित्र है। जिसको तुम भी नम्बरवार ही जानते हो। यह समझने की बातें हैं। यह तुम पाईन्ट्स आद लिखते भी हो भाषण आद करने समय रिवाईज करने लिए। डाक्टर, बैरिस्टर लोग भी पाईन्ट दवाईयां आद नोट करते हैं। नोट किया ही जाता है रिवाईज कर फिर औरों को सुनाने लिए। नोट कराते हैं बाप। मत तो बाप की ~~मिलती~~ मिलती है ना। लिखते हो तो फिर रिवाईज भी करना चाहिए। भाषण करने समय पढ़ना चाहिए। इन में तो है बाबा की प्रवेशता। अकेला बाबा का पहला सन्तान हूं ना। इनको अर्जुन, रथ कहते हैं ना। यह रथ तो है ना। बाप तुमको समझावेंगे यह भी सुनेंगे। वह पाईन्ट नहीं ~~सबु~~ सुनाते तो मुझे क्या पता जो तुमको समझावें। धारणा करते हैं तो बोलते हैं। बाप कहते भी हैं यह बहुत जन्मों के अन्त में है। पहले यह था। ब्रह्मा और विष्णु का चित्र भी है। पहले है यह। जरूर बच्चे भी होंगे। तुम बच्चे हो ना। तुम भी राजाई में चलते हो जरूर नम्बरवार। जितना याद करते, धारणा करते हैं ऐसा पद पाते हैं। ऐसे भी नहीं नाम-मात्र सिर्फ लिखना है। फायदा कुछ नहीं। दूसरे के भी नाम नहीं आते हैं। क्योंकि मुरली तो रोज ब चलती ही रहती है। बाप कहते हैं दिन प्रति दिन गुह्य बातें सुनाता हूं। यह पाईन्ट लिखना सिर्फ भाषण के टाईम काम आती है। सो भी ~~लेटेस्ट~~ लेटेस्ट नई2 पाईन्ट्स ही देखेंगे। पहले की पुरानी पाईन्ट थोड़े ही काम में आवेंगे। वह तो खत्म हुई फिर नई2 पाईन्ट सुन कर धारण कर सुनाना चाहिए। न धारण करते हैं न सुनाते हैं ऐसे ही ~~पड़~~ पड़े रहेंगे। भाषण के बाद ऐसे बहुत पाईन्ट याद आती है। यह पाईन्ट भूल गये जो समझाती थी। यह पाईन्ट सुनाते थे तो शायद बुधि में बैठ जाता। तुम हो ज्ञान के स्पीकर्स नम्बरवार। यह तो तुम कहेंगे पहले नम्बरवार ये सब से अच्छी ममा थी। बाबा की तो बात ही अलग है। यह तो बापदादा दोनो इकट्ठे हैं ना। ममा बहुत अच्छी समझाती थी। बच्चे सा० भी करते हैं सम्पूर्ण ममा का। इनमें भी बाबा प्रवेश कर समझा सकते हैं। बाबा भी प्रवेश करते हैं। कहीं बहुत जरूरी होगा तो बाबा भी आवेंगे। ममा भी आती होंगी। यह सब समझने की बातें हैं। पढ़ाई फुर्सत के समय ही होती है। शरीर निर्वाह लिए तो सारा दिन धंधा धोरी आद करते हैं। यह विचार सागर मंथन करने लिए फुर्सत, शान्ति चाहिए। तुम्हारा भी कोई2 बहुत अच्छी सर्विस करने वाले हैं। तो उनको भी मदद करनी है। उनको आत्मा को याद करना पड़ता है। शरीर को याद कर फिर आत्मा को याद करना पड़ता है। तुमको भी यह युक्ति रचनी है। कोई अच्छा सर्विसएबुल बच्चा है, कुछ नुकसान होता है तो उनको मदद करनी चाहिए। बाप को याद करना होता है फिर खुद को भी अपने को आत्मा समझ कुछ न कुछ उनकी आत्मा को याद करना पड़ता है। वह जरूर मुर्च लाईट देंगे। ऐसे भी नहीं जो ऐक ही जगह ~~बैठना~~ बैठना होता है। लेटे भी याद कर सकते हैं। चलते-फिरते, खाते-पीते याद न

रहना है। भोजन खाने से पहले भी बाप को याद करो। दूसरे को कमेन्ट देनी है तो फिर रात को सवेरे को याद में रहना होता है। बच्चों को समझाया है गया है सवेरे उठ कर बाप को याद करो। जितना जो याद करेंगे उतना ही बापकी कशिश होगी। बाप भी लाईट देंगे। बाबा का तो यही धंधा है। इनको याद भी करना होता है। सर्चलाईट भी देनी होती है। जब बहुत सर्चलाईट देना होता है तो खुद बाप को याद नहीं करते। सर्विस है ना। सर्विस में दिल लगती है। सर्चलाईट देनी होती है। याद करते हैं तो बाप भी सर्चलाईट देते हैं। आत्मा को देखना माना सर्चलाईट देना। कैदी बेटियों को मदद मिलती है। इनको भी तो सर्चलाईट तो देनी है ना। वह भी समझते हैं इनको लाईट मिलती है। फिर उनको कृपा आशीर्वाद जो कहो, परन्तु खुद याद करते हैं तो सर्चलाईट जरूर मिलेगी। सर्विस खुला किनारा होगा तो तरस पड़ेगा उनको सर्चलाईट देवें। रात जाग कर भी आत्मा को याद करेंगे। क्योंकि उनको याद की दरकार रहती है। रात को जागना भी होता है। याद करते हैं तो रिटर्न सर्विस भी चाहिए। जो याद करता है तो उनको याद पहुंचती है। बाप को भी दिल होगी हम भी याद करेंगे उनको सर्चलाईट मिलेगी। बाप भी सर्चलाईट देते हैं। बाप और बच्चे का लव पव से जाती है। यह बड़ी सूक्ष्म बातें हैं। बाकी समझानी तो बिलकुल ही सहज है। उन में विघ्न नहीं पड़ेंगे। मुख्य है याद की बात। इसमें ही विघ्न पड़ती है। याद से ही जैसे वह सोने का खजाना बन जाता है। जिसमें धारणा होनी है। कहते हैं ना शेर का दूध सोने के बर्तन में ठहरता है। इस बाप के ज्ञान धन के लिए भी सोने के बर्तन चाहिए। वह तो जब होंगे जब याद की यात्रा में रहेंगे। फिर मुरली भी अच्छी चलेगी। जो याद नहीं करते तो ज्ञान की धारणा भी नहीं होती। कर्म के नहीं रहते। ऐसे मत समझो। बाप तो अन्तर्यामी है। बाबा ने तो पहले से ही ऐसे बोला था। यह सब ग्रन्थ हैं। बोला और हुआ यह। यह भक्ति मार्ग में होता है। यह वही समय की बात है। भक्ति मार्ग में यह बातें चलती है। कोई ने कहा बच्चा होगा या बच्ची। बोला बच्चा होगा अच्छा बच्चा हो गया। समझेंगे यह तो अन्तर्यामी है। जैसे अक्षर भूत का खेल भी होता है ना। सन्यासी भी ऐसे ही कह देते हैं अच्छा बच्चा न हुआ तो कहेंगे भावी। कह समझते हैं ईश्वर की बाबी। तुम कहेंगे हां भावी। रात दिन का फर्क है ना। ड्रामा का राज तो बाप ने अच्छी रीत समझाया है। पहले तुम भी नहीं जानते थे। यह तो तुम्हारा है मीजोरा जन्म। अभी तुम जानते हो हम यह देवता बन रहे हैं। यह इतना ऊंच कैसे बने इसका टापिक पर भी तुम समझा सकते हो। आज हम बतावेंगे कि ल0ना0 को कि यह विश्व का मालिक पना कैसे मिला। फर्स्टक्लास टापिक है। एक कई मनुष्य आ जावेंगे। यह वन्डरफुल बात है ना। ल0ना0 को यह राज्य कैसे मिला, कैसे गवांया हम सारी हिस्ट्री जागरफी बतावें। ऐसे तो कोई की भी बुधि में नहीं आवेगा। यह भी कहते हैं हम ल0ना0 को पूजा करते थे। गीता पढ़ते थे। बाबा ने प्रवेश किया तो सब छोड़ दिया। सा0 हुआ। बाप कहते हैं मुझे याद करो तो विकर्म विनाश होंगे। इसमें कुछ भी गीता आदि पढ़ने की बात ही नहीं। गीता में तो है झूठी बातें। बाप बैठा था तो भक्ति को छुड़ा दिया। गीता को फेंक दिया। कहें शिव का दर्शन करने भी नहीं जाते थे। भक्ति मार्ग की बातें ही एकदम छोड़ गई। बाप के आने से भक्ति खत्म हो जाती है। यह है नालेज रचता और रचना के आदि मध्य अन्त का। बाप रचता को जानने से तुम सब कुछ जान जाते हो। तुम तो टापिक ऐसे वन्डरफुल सुनो जो मनुष्य सुन कर खुश हो जाये। सभी मांगेंगे सुनने लिए। इन्हों ने विश्व का राज्य कैसे लिया यह तो कोई भी बता न सके। मंदिर आदि में तुम कोई से भी पूछो। यह तो सारे विश्व के मालिक थे। और कोई धर्म ही न था। भारत ही था। फिर तुम सतयुग को लाखों वर्ष कैसे कह देते हो। औरों को तो 2 हजार वर्ष अढ़ाई हजार कह देते हो। इन्हों को लाखों वर्ष कैसे दिये हैं। किसी के बुधि में नहीं आता है। कहते भी हैं क्राईस्ट से इतना हजार वर्ष पहले पैराडाईज था। फिर लाखों वर्ष कैसे कहते हो। लाखों वर्ष में तो फिर मच्छड़ सदृश्य ढेर के ढेर मनुष्य हो जाये। मिलटी मिलियन हो जाये।

कुछ भी बुधि में नहीं बैठता है। तुम थोड़े भी बात सुनाओ तो चक्कर खावें। परन्तु जो इस कुल के होंगे उनके बुधि में आवेगा नहीं तो कहेंगे यह तो पता नहीं क्या बोलते हैं। ब्रह्माकुमारियों की ज्ञान ही कड़ा फुला है। विचित्र ज्ञान है ना। इसमें बड़ी बुधि चाहिए। मुख्य तो बात है याद की। स्त्री पुरुष एक दो को याद करते हैं ना। यह है आत्माओं की बात। जो आत्मा परमात्मा बाप को याद करती है तो बाप भी उनको याद करते हैं। कशिश होगी। वह हुआ सूक्ष्म। सर्विसेबुल बच्चों को भी याद करता हूँ ना। सन्तोष है, कितनी सर्विस करती है। कितना सहन करना पड़ता है। कोई2 पेशेन्ट कितना तंग करते हैं। सभी रोगी पेशेन्ट हैं ना। आगे निरोगी बनना है। अभी तुम समझते हो हम सभी पेशेन्ट हैं। यह भी टापिक तुम याद रख सकते हो। आपस में समझो तुम जो घड़ी2 बिमार होते हो हम ऐसी संजीविनी बूटी देवें जो तुम कब भी बिमार नहीं पड़ेंगे। अगर हमारी दवाई अच्छी रीत काम में लगावेंगे तो। कितनी सस्ती दवाई मिलती है। 2। भी दी सतयुग त्रेता में तुम कब भी बिमार नहीं पड़ेंगे। वह है ही स्वर्ग। ऐसे2 पाईन्ट नोट कर फिर भाषण लिखना चाहिए तो पाईन्ट निकलती ही रहेंगी। तुम तो सर्जनों के सर्जन हो। तो उन्हों को भी लिख कर भेजना चाहिए। सर्जनों का भी बड़ा अविनाशी सर्जन ऐसी दवाई देते हैं जो तुम 2। जन्म कब बिमार नहीं पड़ेंगे। इस जन्म के बाद दूसरे 2। सीढ़ी में कब बिमार नहीं पड़ेंगे। इस जन्म के लिए नहीं कहते हैं। भविष्य 2। जन्म के लिए कहा जाता है। अभी तो है संगम। ऐसी2 बातें सुन कर मनुष्य खुश होंगे। भगवान कहते हैं मैं अविनाशी सर्जन हूँ। याद भी करते हैं ना। पतित-पावन अविनाशी सर्जन आओ। अभी आया हूँ। पिछाड़ी में सब समझेंगे। दिन प्रति दिन जो टापिक मिलती रहती है उनको उठाते रहो। बाबा युक्तियाँ बहुत बतलाते रहते हैं। पूछते हैं सतयुगी शिवालय के हो या कलियुगी वेश्यालय के हो? कितनी अच्छी पाईन्ट है। परन्तु पत्थर बुधि समझते नहीं हैं। बाप कहते हैं दिन प्रति दिन कितनी गुह्य पाईन्ट सुनाते रहते हैं। एक ही टाईम सुना दें तो ज्ञान सागर को कहेंगे। अभी जैसी2 पाईन्ट मिलती जाती है खुशी होती है। परन्तु पत्थर बुधि समझते नहीं हैं। सोने को गलाने में बहुत टाईम लगता है। तुम्हारे में भी खाद निकलने में टाईम लगता है। जोर से याद करने से खाद निकलती है। सोना भी बहुत तेज आग से गलता है। बाप भिन्न2 प्रकार से समझाते हैं। बाप को बहुत 2 प्यार से याद करना है। लाचारी नहीं। बाप जो विश्व का मालिक बनाते हैं उनको बहुत ही प्यार से याद करना है। खुद मालिक नहीं बनते। परन्तु मालिक पना तो देते हैं ना। विश्व का मालिक बनाते हैं तो है ना। उनको निष्कामी कहा जाता है। मनुष्य कहेंगे हम निष्कामी है परन्तु निष्कामी कोई हो न सके। निष्कामी सिर्फ एक ही बाप है। बच्चों को कहते बच्चे नमस्ते। तुम विश्व के मालिक बन सकते हो। मैं तो तुम्हारा सेवा कर वानप्रस्त में चला जाता हूँ। बहुत जन्मों के अन्त के भी जन्म में प्रवेश करता हूँ। 60 वर्ष बाद वानप्रस्त अवस्था होती है। सतयुग में तो वानप्रस्ती होते नहीं। वह थोड़े ही समझते हैं वानप्रस्त माना वाणी से पार जाना है। यह सभी पाईन्ट अभी बाप तुम बच्चों को समझाते हैं।

जो बाप को जानते हैं वही बाप को मीठे लगते हैं।

बाप कहते हैं बहुत याद करेंगे तो तुम्हारे पाप कटेंगे। पतित-पावन मैं हूँ। मुझे पतित-पावन कहते हो तो याद करना पड़े। यह है याद की यात्रा। जिससे तुम तमोप्रधान से सतोप्रधान बनना होता है। 5000 वर्ष लगे तमोप्रधान बनने में। अभी फिर सतोप्रधान बनना है। तमोप्रधान से सतोप्रधान सेकण्ड में बन जाते हैं। सतोप्रधान की दशा बृहस्पत की दशा बैठ जाती है। बाप को तो जरूर याद करना चाहिए ना। परन्तु माया बहुत आपोजीशन करती है। बाबा के बने तो याद रहनी चाहिए ना। परन्तु माया छुड़ाये देती है। याद ही नहीं करते हैं। मेनर्स भी बहुत अच्छी चाहिए। कोई2 के तो मेनर्स बहुत खराब होते हैं। शिव बाबा की फरमान नहीं मानते हैं। बाप इन द्वारा राय देते हैं तो इनकी माननी चाहिए ना। परन्तु इनके भी नहीं मानते तो निमणके के कहेंगे ना। निमागा भी कहा जाता है। ओम।